

युक्त्यनुशासन

YUKTYANUSHAASANA

आ. समन्तभद्र · ४वीं शती · अभिलेख १५/९०

आ. समन्तभद्र

→

श्री पात्र केसरी स्वामी

संक्षिप्त परिचय

स्वामी समन्तभद्र कृत स्तुति-रूप दार्शनिक काव्य — वीर जिनेन्द्र की स्तुति के बहाने युक्ति (तर्क) से अनेकान्त शासन की श्रेष्ठता का स्थापन।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

युक्त्यनुशासन — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १५ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. समन्तभद्र; रचना-काल ४वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६८) के अनुसार इनका समय १२०–१८५ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "आप्तमीमांसा/आदि अनेकग्रंथ" उल्लिखित है। इसी लेखनी से रत्नकरण्ड श्रावकाचार, आप्तमीमांसा, स्वयम्भूस्तोत्र, देवागमस्तोत्र, जिनशतक, द्वात्रिंशिका भी इस सूची में सम्मिलित हैं।

इसी लेखनी से

रत्नकरण्ड श्रावकाचार

आप्तमीमांसा

स्वयम्भूस्तोत्र

देवागमस्तोत्र

जिनशतक

द्वात्रिंशिका

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗

जैनकोश ↗

Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १५ — मूल छायाचित्र

